E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 1, Issue- 12 | December 2024

बून्दी की ऐतिहासिक धरोहर

रानू पारीक [1], प्रो. डॉ सोन कँवर हाड़ा [2]

[1] शोधार्थी, कैरियर पांइट यूनिवर्सिटी कोटा (राज.)

[2] शोध पर्यवेक्षक, इतिहास, कैरियर पांइट यूनिवर्सिटी कोटा (राज.)

सारांश:-

बून्दी, राजस्थान की एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक नगरी है, जो अपने अद्वितीय स्थापत्य, सांस्कृतिक समृद्धि और कलात्मक परंपरा के लिए प्रसिद्ध है। इसकी सबसे प्रमुख धरोहर *तारागढ़ दुर्ग* है, जो सामरिक दृष्टि से मजबूत और स्थापत्य की दृष्टि से आकर्षक माना जाता है। यह किला 13वीं शताब्दी में राव वरसिंह द्वारा बनवाया गया था और इसके भीतर बने विभिन्न महल, चित्रशालाएं, दरबार, जल संरचनाएं और धार्मिक स्थल इसकी बहुआयामी विरासत को दर्शाते हैं।

Keywords: बून्दी, तारागढ़ दुर्ग, राव देवसिंह, राव वरसिंह, बून्दी चित्रशैली, चित्रशाला, भीम बुर्ज

बून्दी का संक्षिप्त ईतिहास:-

अरावली की पहाड़ियों की तलहटी में बून्दी घाटी है राज्य की राजधानी बून्दी का नाम बून्दी मीणा (मीना) के पीछे प्रसिद्ध हुआ और राज्य की राजधानी के नाम से ही राज्य का यही नाम पडा। यहाँ जैता मीणा के अधीन तीन सौ घरों की एक बस्ती थी। एक बार अभिमानी जैता ने चैहान राजपूत जसराज गोलवाल की दो पुत्रियों से अपने दो पुत्रों के विवाह का प्रसताव भेजा। जैता का कामदार होने के कारण उसने बम्बावदा के हाड़ावंशीय राजकुमार देवसिंह से याचना की तब दोनों ने मिलकर एक षडयंत्र के अनुरूप बून्दी से 4 कोस दूर उमरथूणा को उकत ग्राम मे विवाह स्थल निश्चत किया। उक्त आयोजन से देवसिंह को भी आमंत्रित किया गया। मीणों की बारात एकत्र हो गयी तो बारूदों का ढेर बिदा दिया गया। जब मीणों की बारात एकत्र हो गयी तो बारूदों को ढेर बिछा दिया गया और बारता एकत्र होते ही ढेर मे आग लगा दी। तब राव देवा ने जैता मीणा के बचे हुऐ साथियों व समस्त मीणा परिवार को तलवार के घाट उतर दिया। तदन्तर आषाढ़ नदी नवमी मंगलवार वि.सं. 1398 (1241 ई.) के दिन बून्दी को राव देवा ने अपने अधिकार मे कर लिया।

तारागढ़ दुर्ग:- बून्दी राज्य वीरता और शोर्य की क्रीडा स्थली है। बून्दी राज्य का दुर्ग तारागढ़ शक्ति और सामरिक स्थापत्य का प्रतीक है। रूढ़याढ़ किपलिंग नामक बिट्रीश पत्रकार ने 20 वीं शंताब्दी में बून्दी भ्रमण करते हुए बून्दी की तारागढ़ की संज्ञा प्राप्त दुर्ग पर समीक्षा व्यक्त करते हुए लिखा था। ''इसे देवताओं ने स्वप्न में अपने निवास हेतु निर्मित करवाया था, मानव ने नहीं।''

इस दुर्ग पर हर अभिलेख के साक्ष्य से प्रमाणित है कि इसे राव देवा के वंशज राव वरसिंह ने 1242 ई. में करवाया था। उन्होने मेवाड़, मालवा और गुजरात की ओर से सम्भावित आक्रमणों से सुरक्षा हेतु बून्दी के पर्वत शिखर पर एक विशाल दुर्ग का निर्माण करवाया जो तारागढ़ के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस दुर्ग के पर्वत की ऊंची चोटी पर स्थित होने के फलस्वरूप धरती के नीचे से आकाश के तारों के समान दिखाई पड़ने के कारण कदाचित इसका नाम तारागढ़ पड़ा हो। दुर्ग के सिंह द्वार को द्वार के प्रमुख मार्ग को ''नाहर को चैहट्टा से जोड़ा गया है। सिंह द्वार मे प्रवेश के लिए सर्वप्रथम यहां हाथिया पोल है जिसे रावराजा रत्नसिंह ने 1608-1631 ई. मे निर्मित करवाया था। महल के आन्तरिक

भाग मे हाथिया पोल को संबंध करता है एक विशाल द्वार जिसके दोनो ओर ही स्तम्भ है जिसके शीर्ष पर पाषाण निर्मित दो विशाल हाथी सूंड जोडे हुए खडे है हाथियां पोल के बाये भाग में दीवान की कचहरी नामक एक विशाल कक्ष है। खडकला पत्थरों से मजबूत चूने के गोल व मुख्यत घरट के चूने द्वारा जोड़े गए इस दुर्ग के विभिन्न भाग विभिन्न लक्ष्यों की पूर्ति हेतु बनवाए गये थे। हाथिया पोल के दक्षिणी भाग में भी मंजिला महल जो करौली के महल के जैसा प्रतीत होता है इसे महाराव अनुरूद्ध सिंह ने निर्मित करवाया था। इस महल की सौन्दर्यता इसमें निकाले गए 9 प्रकोष्ठों में निर्मित है जो शीर्वस्थ मंजिल पर दृष्टव्य है। हाथिया पोल के आन्तरिक शीर्षस्थ से प्रवेश करने पर एक उभरे हुए भूमि खण्ड पर चढ़कर महाराव राजा उम्मेद सिंह (1749-73 ई.) द्वारा निर्मित प्रख्यात चित्रशाला तक पहुँचा जा सकता है जिसमें बून्दी शैली की विशिष्ट लक्षणों से युक्त विभिन्न भिति चित्रों का अंकन हुआ है इसकी दीवारों पर निर्मित चित्र महाराव उम्मेद सिंह तथा महाराव विशन सिंह के समय 1773-1821 ई. में निर्मित हुए है। चित्रों मे राग रागिनी, संगीता, प्रेमाख्यान एवं राजकीय समारोह आदि का समवेश किया गया है चित्रशाला के सम्मुख दो आयताकार उद्यान है जिसको चारो और चार फीट चैड़ाई का खेत संगमरमर सहशय पत्थर का मार्ग है जो बून्दी राज्य के उमर नामक ग्राम की पत्थर की खानों मे उपलब्ध था। इन दोनों उद्यानों के मध्य आयताकार बाउण्ड्री है जिसमें पानी की सतह तक पहुंचने हेतु सीढ़ियां बनाई गई है। इसमें दो शिलालेख लगे हुए है जिसमें एक शिलालेख संस्कृत में व दूसरी शिलालेख लगे हुए है जिसमें एक शिलालेख संस्कृत मे व दूसरी शिलालेख डींगल भाषा में लिखा गया है। इसका हिन्दी अनुवाद जिसके अन्तर्गत चार राजपूत क्रमश चैहान परमार, प्रतिहार व चालुक्य की उत्पत्ति अग्निकुण्ड से मानी गई है। इसमें लिखा गया है चैहान वंश से अस्थिपाल जी का जन्म हुआ इन्ही के वंशज हाड़ा कहलाए। इसके पश्चात् महाराजधिराज देवाजी हुए। जिन्होने बून्दी पर कब्जा किया इसके पश्चात महाराव भाव सिंह, कृष्ण सिंह, अनिरूद सिंह, अजीत सिंह व रामसिंह जिनहोने दुर्ग रक्षम नामक बुर्ज जिसे भीम दुर्ग कहते है जो कि किलेदार प्रधान आन्दी लक्ष्मी के द्वारा बनवाया।

भीम बुर्ज की विशालता व ऊचाई प्रतिरक्षण व आक्रमण दोनों दृष्टिकोण से अधिक महत्व था यहां वर्तमान मे दो तोपे अष्टधातु मिश्रण द्वारा निर्मित रखी है। भीम बुर्ज के पश्चिमी दिशा मे मन्दिर बना हुआ है जो शिवजी का है मनिदर से उत्तर दिशा की ओर रानी जी के महल है इसके पश्चिमी छोर पर विशाल काष्ठ निर्मित दरवाजा लगा हुआ है इसके अन्दर खुला चैक है जहाँ कक्षों में सुन्दर चित्र बनाए गए है जो वर्तमान मे धुधले पड़ गए है यह महल व इनकी चित्रशैली आदि शत्रुशलय सिंह द्वारा निर्मित किए गए थे। महल की दीवारों पर लगभग 18 तिबारियां है। इन तिबारियों की विशेषता यह है कि बाहर का दृश्य स्पष्ट दिखाई देता है परन्तु अन्दर खड़े व्यक्ति को देखा नहीं जा सकता।

इसके आगे किलेदार की कचहरी आती है जो बाराहदरीनुमा बनी हुई है इस कचहरी की विशेषता यह है कि यहां पानी संग्रह की तीन होदियां बनी हुई है यहां घोड़ो को बाधने हेतु छोटे-छोटे खण्डों में कक्ष बने हुए है। यहां बीचों बीच 8 फीट गहरा गड्ढा है।

जिसमें लकडी का विशाल चक्र बना हुआ है जिसका उपयोग मृत्युदण्ड देने में किया जाता था इसके साथ ही एक चैडी नाली बनी हुई है जो रक्त प्रवाहिनी थी। बून्दी दुर्ग की एक अन्य विशेषता है दुर्ग में निर्मित चार पानी की ढाँके प्रत्येक ढाँके में आठ जालियाँ पेयजल को स्वच्छ करने के लिए लगाई गई थी जिसमें वर्षा का जल एकत्रित होता था। जिससे पेयजल के लिए सैनिकों को संकट का सामना न करना पड़े। दुर्ग में निर्मित सबसे बडा ढाँका रावर सिंह जी ने बनवाया था जिसे महाराव राजा रामसिंह ने अधिक गहरा बनवाया। महाराव राजा अनुरूद्ध सिंह द्वारा बनवाया गया घोडों का अस्तबल अत्यन्त सुंदर है। दुर्ग का एक खण्ड यहां के सन्त नरेश महाराव राजा उम्मेद सिंह जी के आराध्य श्री जी (विष्णु भगवान) के लिए है। ज्ञात होता है कि नरेश उम्मेद सिंह जी को "श्री जी हजूर" की संज्ञा प्राप्त हुई।

इस दुर्ग के एक कक्ष में जलघड़ी भी है इसके बाद महल का भाग राव छत्रसाल द्वारा विस्तृत करवाया था जो कि छत्रशाल के नाम से जाना जाता है। सिंहासन कक्ष से आते समय रंग विलास आता है। यहां सुन्दर बगीचा है जिसके उत्तर की ओर चित्रशाला बनी हुई है यहं चित्रशाला अनिरूद्ध महल का भाग है। अनिरूद्ध महल 1679 ई. में बनवाया गया जिसेजनाना महल के रूप में प्रयोग किया गया।

इससे आगे मोती महली आता है उसका निर्माण राव भाव सिंह जी ने करवाया था। इसी की दाहिनी ओर दिवान कचहरी है और बाई ओर बादल महल है जहां भित्ति चित्र से निर्मित है जो बादल महल की विशेषता को दर्शाता है परन्तु वर्तमान मे ये चित्र पूर्णत नष्ट हो गए है। तारागढ़ दुर्ग के शिल्प सौन्दर्य के साथ वैज्ञानिक आकर्षण की वस्तुएं भी ऐतिहासिक महत्व की है। बून्दी के दिवान पण्डित गंगा सहाय द्वारा निर्मित भूगोल यंत्र यहां उपलब्ध है। बून्दी राज्य अनेक तांत्रिक प्रतिभाओं का अस्तित्व था। वास्तुशिल्प के प्रतीक चैरासी खम्भों की दतरी में चैरासी स्तम्भों की सृजन को हिन्दू धर्म शास्त्रों के चैरासी लाख योनियों का प्रतीक माना जाता है इस दृष्टि से तंत्रों की ज्यामिति को इस राज्य में न्यूनाधिक रूप कला व भवन स्थापत्य के द्वारा भी प्रयुक्त किया गया था। जैत सागर के किनारे यह सुख महल निर्मित है जैत सागर का निर्माण बून्दी आर्यन मीणा मुखिया जैताने करवाया था इसी के नाम से जैत सागर नाम पड़ा सुख महल को महाराव राजा विष्णु सिंह ने 1773 ई. में बनवाया था।

निष्कर्ष:

बून्दी का इतिहास वीरता, युक्ति, स्थापत्य कला और सांस्कृतिक समृद्धि का अद्भुत उदाहरण है। यह नगर न केवल राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण रहा है, बल्कि इसकी स्थापत्य कृतियाँ जैसे तारागढ़ दुर्ग, चित्रशालाएँ, भित्ति चित्र, जल संरचनाएँ और सुख महल इसकी उन्नत कला, विज्ञान और सांस्कृतिक चेतना को भी दर्शाते हैं। बून्दी की स्थापत्य शैली में जहां एक ओर राजपूत वीरता और भव्यता झलकती है, वहीं दूसरी ओर तांत्रिक और धार्मिक विश्वासों का भी गहन प्रभाव दिखाई देता है। इस प्रकार, बून्दी न केवल राजस्थान, बल्कि सम्पूर्ण भारत की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और वास्तुकला विरासत में एक गौरवशाली स्थान रखता है।

संदर्भ सूची:-

1. महाकवि सूर्यमल मिश्रण वंश भास्कर, सम्पादक, स्व. पं. रामकर्ण आसोण, मुद्रक प्रताप प्रेस, उदयपुर, बाफना बुक डिपो, 1956 ई. पृ.सं. 1624
2. वंश प्रकाश, पृ. 52
3. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर ऑफ बून्दी, 1964 पृ. 3
4. डिस्ट्रिक्ट गजोटियर ऑफ बून्दी 1964 ई., पृ. 3
5. वंश प्रकाश, पृ. 33
6. वंश भास्कर, पृ. 1624 वंश प्रकाश